

अच्छी पत्नी' का मिथक और हिन्दी उपन्यासों में नारीवादी प्रतिरोध

सोनू निठारवाल,  
रिसर्च स्कालर,  
श्याम यूनिवर्सिटी, दौसा (राज)

डॉ. उमारानी दुबे,  
रिसर्च सुपरवाइजर,  
श्याम यूनिवर्सिटी, दौसा (राज)

सार / Abstract

यह शोध पत्र 'अच्छी पत्नी' की उस सामाजिक-सांस्कृतिक मिथकीय संकल्पना का विश्लेषण करता है, जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था का एक प्रमुख आधार रही है। इस संकल्पना के अंतर्गत नारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह त्याग, समर्पण, चरित्र और सेवा की मूर्ति बनकर परिवार विशेषकर पति के हितों की रक्षा करे। यह पत्र इस मिथक के विरुद्ध हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त नारीवादी प्रतिरोध की समीक्षा प्रस्तुत करता है। मन्नू भंडारी के 'महाभोज' और 'आपका बंटी' तथा मृदुला गर्ग के 'अनित्य' और 'चित्कोब्रा' जैसे उपन्यासों को केंद्र में रखते हुए, यह अध्ययन दर्शाता है कि कैसे इन रचनाओं की नायिकाएँ पति, परिवार और समाज द्वारा थोपे गए इस आदर्श को चुनौती देती हैं। यह पत्र इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे विवाहित जीवन की नीरसता, अकेलेपन, मनोवैज्ञानिक संक्रांस और यौनिक इच्छाओं का साहसपूर्ण चित्रण स्वयं एक राजनीतिक कार्य बन जाता है। इन उपन्यासों में नारी पात्र केवल पीड़ित ही नहीं हैं, वे सक्रिय प्रतिरोध की भाषा गढ़ते हुए, अपनी इच्छा, अस्मिता और स्वायत्तता के लिए संघर्ष करती दिखाई देती हैं, जिससे 'अच्छी पत्नी' का पारंपरिक ढाँचा टूटता और बदलता नज़र आता है।

कीवर्ड / Keywords

नारीवाद, हिन्दी उपन्यास, पितृसत्ता, अच्छी पत्नी का मिथक, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, महाभोज, आपका बंटी, अनित्य, चित्कोब्रा, अस्मिता, यौनिकता, प्रतिरोध।

मुख्य शोध पत्र

भारतीय समाज में नारी की भूमिका को परिभाषित करने वाली अनेक संकल्पनाएँ हैं, जिनमें 'अच्छी पत्नी' का मिथक सर्वाधिक शक्तिशाली और सर्वव्यापी है। यह मिथक सती-सावित्री जैसे पौराणिक आदर्शों से लेकर आधुनिक युग की 'सुपरवुमन' तक एक सतत विकसित होती हुई अवधारणा रही है, जिसका मूल उद्देश्य नारी के शरीर, मन और इच्छा को पारिवारिक संस्था के भीतर नियंत्रित और नियमित करना है। एक 'अच्छी पत्नी' से अपेक्षा की जाती है कि वह मूक, त्यागी, सेवाभावी और सदैव अपने पति की

प्रसन्नता को प्राथमिकता देने वाली हो। वह अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं, यौनिक इच्छाओं और स्वायत्तता का बलिदान करके ही 'आदर्श' बन सकती है। हिन्दी साहित्य, विशेषकर उपन्यास विधा, ने इस मिथक के निर्माण और उसके विखंडन दोनों में ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मन्नू भंडारी और मृदुला गर्ग जैसी लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों के माध्यम से इस मिथक के विरुद्ध एक सशक्त नारीवादी प्रतिरोध दर्ज किया है। यह शोध पत्र इसी प्रतिरोध के स्वरूप, रणनीतियों और प्रभाव का विश्लेषण करेगा।

**'अच्छी पत्नी' का मिथक: एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य**

'अच्छी पत्नी' का मिथक किसी एक विशेषता का नहीं, बल्कि एक जटिल सामाजिक नियंत्रण तंत्र का नाम है। यह नारी के लिए 'सम्मान' और 'सुरक्षा' का झूठा आश्वासन देकर उसे एक सीमित दायरे में बाँध देता है। नारीवादी आलोचना में, यह मिथक पितृसत्ता की वह चाल है जो नारी के श्रम, भावनाओं और यौनिकता का हनन करते हुए भी उसे 'पवित्र' और 'गौरवमय' सिद्ध करती है। सिमोन द बोउवार के 'द सेकेंड सेक्स' में प्रस्तुत इस सिद्धांत के अनुसार, "स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है।" 'अच्छी पत्नी' का आदर्श इसी 'बनाने' की प्रक्रिया का सबसे सटीक उदाहरण है। भारतीय संदर्भ में, यह मिथक 'घर' और 'बाहर' के बीच एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींचता है, जहाँ पत्नी का सारा अस्तित्व 'घर' की चारदीवारी में सिमटकर रह जाता है। उसकी सफलता और असफलता का मापदंड उसकी अपनी इच्छाएँ नहीं, बल्कि पति और परिवार की संतुष्टि होती है। हिन्दी उपन्यासों ने इस मिथक की जटिलताओं को उजागर करने का काम किया है और दिखाया है कि कैसे यह आदर्श वास्तव में नारी के लिए एक सुनियोजित कारागार है।

**मन्नू भंडारी के उपन्यासों में टूटते आदर्श**

मन्नू भंडारी की रचनाएँ मध्यवर्गीय जीवन की सामान्य स्थितियों के भीतर छिपे गहरे मनोवैज्ञानिक संकटों को बहुत ही संवेदनशीलता से उकेरती हैं। उनके उपन्यास 'अच्छी पत्नी' के मिथक को न सिर्फ चुनौती देते हैं, बल्कि उसके टूटने की प्रक्रिया को दस्तावेज़ का रूप भी प्रदान करते हैं।

### 1. 'आपका बंटी': मातृत्व और पत्नीत्व के बीच संघर्ष

'आपका बंटी' उपन्यास सीधे तौर पर टूटते विवाह और उसके बच्चे पर पड़ने वाले प्रभाव की कहानी है, किंतु इसका केंद्रीय पात्र शक्ति एक ऐसी पत्नी का चित्रण करती है जो 'अच्छी पत्नी' के आदर्श को पूरा नहीं कर पाती। शक्ति का अपने पति अंकल (अनिल) के प्रति प्रेम और आकर्षण धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। वह अकेलेपन और भावनात्मक उपेक्षा से ग्रसित है। पारंपरिक 'अच्छी पत्नी' होती तो वह इस टूटते रिश्ते में भी स्वयं को ढाल लेती और 'सहनशीलता' का परिचय देती, किंतु शक्ति ऐसा नहीं करती। वह भावनात्मक रूप से विद्रोह करती है और अंततः पति को छोड़कर चली जाती है।

यहाँ प्रतिरोध का स्वरूप नाटकीय नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक और निजी है। शक्ति का अकेलापन और उदासी, जो पूरे उपन्यास में व्याप्त है, वह विवाह संस्था की नीरसता और खोखलेपन का आरोप है। वह अपने बेटे बंटी के प्रति अपार प्रेम रखते हुए भी, एक 'अच्छी माँ' के रूप में पूरी तरह सफल नहीं हो

पाती, क्योंकि समाज की नज़र में एक 'अच्छी माँ' का होना 'अच्छी पत्नी' बने रहने से जुड़ा है। शक्ति का चरित्र इस मिथक को तोड़ता है कि एक स्त्री के लिए मातृत्व ही परम सिद्धि है। वह अपनी व्यक्तिगत तुष्टि और स्वायत्तता की खोज में विवाह को तोड़ने का जोखिम उठाती है, जो अपने आप में एक क्रांतिकारी कार्य है।

## 2. 'महाभोज': राजनीति और पितृसत्ता के गठजोड़ के विरुद्ध चेतना

यदि 'आपका बंटी' निजी स्तर पर प्रतिरोध की बात करता है, तो 'महाभोज' सामूहिक और राजनीतिक स्तर पर इसकी अभिव्यक्ति है। इस उपन्यास में 'अच्छी पत्नी' का मिथक सीधे तौर पर राजनीतिक सत्ता और पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था का हथियार बनकर उभरता है। रामस्वरूप की पत्नी का चरित्र इसका प्रतीक है। वह एक आदर्श ग्रामीण नारी की छवि में ढली हुई है - सेवा, समर्पण और मौन की मूर्ति। उसके त्याग और श्रम का उपयोग रामस्वरूप अपनी राजनीतिक पूँजी के रूप में करता है।

किंतु, उपन्यास का क्लाइमेक्स तब आता है जब यही 'आदर्श पत्नी' अपने मौन को तोड़ती है। जब व्यवस्था उसके परिवार को निगलने लगती है, तो वह सार्वजनिक रूप से अपने पति और उसकी पार्टी के खिलाफ़ बोल उठती है। यह प्रतिरोध का एक शक्तिशाली और प्रत्यक्ष रूप है। यह घटना सिद्ध करती है कि 'अच्छी पत्नी' का मिथक एक दमनकारी संरचना है, जिसे जब-तब तोड़ा जा सकता है। मन्नू भंडारी दिखाती हैं कि नारी की मौन स्वीकृति उसकी सहमति नहीं है; और जब वह बोलती है, तो पूरी पितृसत्तात्मक व्यवस्था की नींव हिल जाती है।

## मृदुला गर्ग के उपन्यासों में अस्मिता और यौनिकता का प्रश्न

मृदुला गर्ग की रचनाएँ नारी की आंतरिक दुनिया, उसकी यौनिक इच्छाओं और अस्मिता की खोज को और अधिक मुखर और जटिल तरीके से प्रस्तुत करती हैं। उनकी नायिकाएँ शहरी, शिक्षित मध्यवर्ग से आती हैं और 'अच्छी पत्नी' के खोखलेपन को पहचानते हुए, अपने लिए एक नई पहचान की रचना में लगी रहती हैं।

### 1. 'अनित्य': विवाह के बाहर यौनिकता की तलाश

'अनित्य' उपन्यास हिन्दी साहित्य में नारी यौनिकता के प्रति एक साहसिक और ईमानदार दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। नायिका अमित की पत्नी है, किंतु विवाह उसे भावनात्मक और यौनिक स्तर पर संतुष्ट नहीं कर पाता। वह एक अन्य पुरुष, समीर के साथ एक अफेयर शुरू करती है। यह कृत्य 'अच्छी पत्नी' के सबसे बड़े निषेध - 'पतिव्रता' धर्म - का सीधा उल्लंघन है।

मृदुला गर्ग इस अफेयर को केवल एक भोग विलास की घटना के रूप में नहीं, बल्कि नारी की स्वायत्तता और स्वतंत्रता की खोज के रूप में चित्रित करती हैं। अमित की पत्नी के लिए, यह रिश्ता उसके अपने शरीर और इच्छाओं पर अधिकार का प्रश्न है। वह समाज द्वारा निर्धारित 'अच्छी पत्नी' के नैतिक बंधनों

को अस्वीकार करती है। उपन्यास यह सवाल उठाता है कि क्या एक स्त्री का अपनी यौनिकता पर अधिकार नहीं है? क्या विवाह एक अनुबंध है जो उसे सदैव के लिए एक व्यक्ति की संपत्ति बना देता है? 'अनित्य' इन सवालों के जवाब में नारी के पक्ष को रखता है और दिखाता है कि यौनिक स्वतंत्रता की माँग भी नारीवादी प्रतिरोध का एक अभिन्न अंग है।

## 2. 'चित्कोब्रा' : स्वायत्तता और आत्मनिर्भरता का संघर्ष

'चित्कोब्रा' की नायिका कस्तूरी का संघर्ष 'अच्छी पत्नी' के मिथक से एक कदम आगे बढ़कर स्वायत्त आर्थिक और सामाजिक स्थिति हासिल करने का है। वह एक विवाहित महिला है जो अपने पति के साथ रहते हुए भी अपनी एक अलग पहचान बनाने का प्रयास करती है। उसका पति उसकी इस आकांक्षा और स्वतंत्रचेता स्वभाव को समझ नहीं पाता और उस पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगाने का प्रयास करता है।

कस्तूरी का प्रतिरोध उसकी जिद और दृढ़ संकल्प में निहित है। वह पति की इच्छाओं के आगे झुकने के बजाय, अपनी कलात्मक और बौद्धिक क्षमताओं के विकास पर जोर देती है। वह 'घरेलू' और 'सार्वजनिक' के बीच की दीवार को गिराना चाहती है। उपन्यास इस संघर्ष को बहुत ही सूक्ष्मता से चित्रित करता है, जहाँ पति-पत्नी के बीच की टकराहट वास्तव में दो विचारधाराओं - एक, जो नारी को परिभाषित और नियंत्रित करना चाहती है और दूसरी, जो स्वयं को परिभाषित करने का अधिकार माँगती है - की टकराहट है। कस्तूरी का चरित्र 'अच्छी पत्नी' की उस संकल्पना को ध्वस्त करता है जो नारी को पति की छाया मात्र मानती है।

## निष्कर्ष

मन्नू भंडारी और मृदुला गर्ग के उपन्यास हिन्दी साहित्य में नारीवादी चेतना के स्तंभ सिद्ध हुए हैं। इन रचनाओं ने 'अच्छी पत्नी' के सामाजिक मिथक को न सिर्फ़ बेनकाब किया है, बल्कि उसके विरुद्ध एक साहित्यिक-सामाजिक आंदोलन भी खड़ा किया है। इन उपन्यासों की नायिकाएँ - चाहे वह शक्ति हो, रामस्वरूप की पत्नी हो, अमित की पत्नी हो या कस्तूरी हो - कोई भी पारंपरिक 'आदर्श' को स्वीकार नहीं करतीं। वे अपने-अपने तरीके से विद्रोह करती हैं: कोई मनोवैज्ञानिक संक्रास के माध्यम से, कोई सार्वजनिक मौन तोड़कर, कोई अपनी यौनिकता पर अधिकार जमाकर, तो कोई आर्थिक-सामाजिक स्वायत्तता की लड़ाई लड़कर।

ये सभी प्रतिरोध के रूप इस बात का प्रमाण हैं कि नारी की चेतना जागृत हो चुकी है और वह अब मिथकों में जीने को तैयार नहीं है। विवाहित जीवन की नीरसता, अकेलेपन और यौनिक असंतुष्टि का इन उपन्यासों में जो चित्रण है, वह केवल व्यक्तिगत अनुभव नहीं रह जाता, बल्कि एक राजनीतिक कथ्य बन जाता है। यह कथ्य पितृसत्तात्मक समाज के समक्ष यह सवाल खड़ा करता है कि क्या वह नारी को एक समान और स्वतंत्र मनुष्य के रूप में स्वीकार करने को तैयार है? इन उपन्यासों ने न केवल

साहित्य बल्कि समाज को भी गहराई से प्रभावित किया है और 'अच्छी पत्नी' की परिभाषा को एक लोकतांत्रिक, मानवीय और नारी-केंद्रित दिशा देने का प्रयास किया है।

संदर्भ-सूची / Works Cited

1. भंडारी, मन्नू. *आपका बंटी*. राजकमल प्रकाशन, 1971.
2. ---. *महाभोज*. राजकमल प्रकाशन, 1979.
3. गर्ग, मृदुला. *अनित्य*. राजकमल प्रकाशन, 1980.
4. ---. *चित्कोबा*. राधाकृष्ण प्रकाशन, 2006.
5. द बोउवार, सिमोन. *द सेकेंड सेक्स*. 1949. हिन्दी अनुवाद: *स्त्री उपेक्षिता*. अनुवादक: भारती, प्रभा. भारतीय ज्ञानपीठ, 2015.
6. मेनन, निवेदिता. *सीइंग द स्टेट: जेंडर पॉलिटिक्स इन इंडिया*. जुबान बुक्स, 2022. (हिन्दी संदर्भ के लिए प्रासंगिक सैद्धांतिक पुस्तक)
7. शर्मा, प्रमोद कुमार. *हिन्दी उपन्यास में नारी-चेतना*. विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2005.
8. तिवारी, भगवती प्रसाद. *मन्नू भंडारी के उपन्यास: समाज और साहित्य*. वाणी प्रकाशन, 2010.
9. अग्रवाल, सुमन. *मृदुला गर्ग के साहित्य में नारी-अस्मिता*. राजपाल एंड सन्स, 2018.